लेख shala

Expressing the Inexpressible

आरम्भ

आरम्भ का यह पहला अंश महाभारत के
अद्भुत पात्र दानवीर कर्ण को समर्पित

भगवान् नहीं दिखे

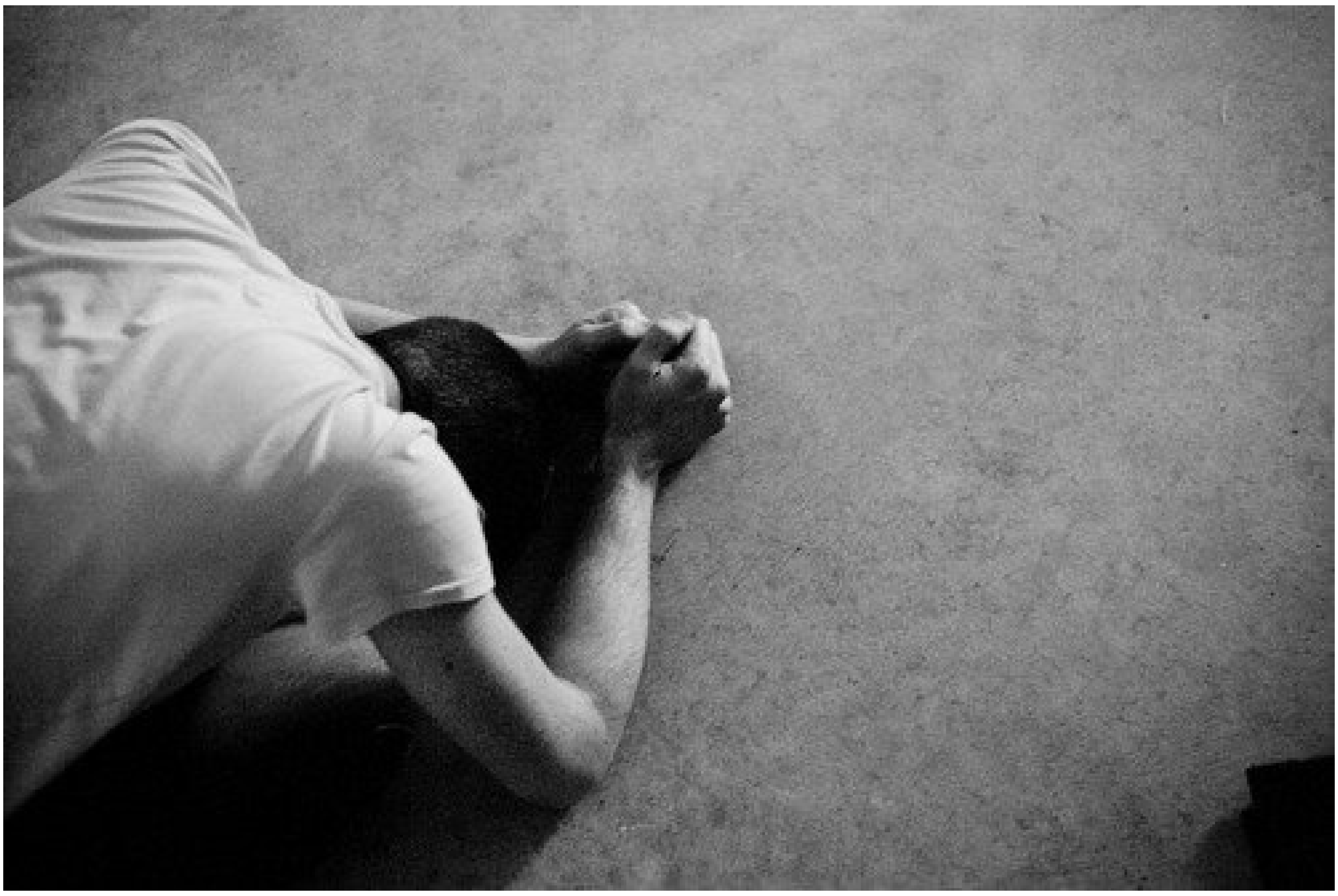

इस बात को तक़रीबन 10 साल हो चले है मगर आज भी जब ये किस्सा याद करता हूँ तो आँखों में चमक और होठो पर हंसी की लहर सी दौड़ जाती है.

वो शनिवार की दोपहर में सचिन ने एकाएक बुलाया और कहा “आज खाटू श्याम जी के चले क्या..?” हम चाचा – ताऊ के बालको का गुट अगले आधे घंटे में तैयार था. निकलने से पहले 10 मिनट में यात्रा का सारा खांचा तैयार हो गया और खाने पीने का माल बिस्कुट, भुजिया इकठा कर लिया गया. निकलते निकलते वक्त शाम के 5 का हो चला था और 5 :30 होते होते हम विचित्र प्राणियों से भरी हुई मारुती 800 दिल्ली से खाटू शाम जाने वाले हाईवे पर पूर्ण रफ़्तार से चल रही थी.

ये वाक्या मेरे जेहन में इसलिए भी घर करता है क्युकी घर वालो की अनुपस्थिति में ये मेरी पहली लम्बी यात्रा थी तो मैं काफी खुश और रोमांचित महसूस कर रहा था. राजस्थान में घुसते ही एक शानदार ढाबे पर हमारी मारुती 800 लगी और हम लोग खाने पर टूट पड़े. ये तो पता नहीं क्या खाया था मगर जो खाया था पेट फटने तक खाना खाया था.

लम्बी दूरी होने के कारण हमारे फर्नान्डो अलोंसो (सचिन) और माइकेल शुमाकर (कालू) स्टीयरिंग बदल बदल के गाडी चला रहे थे. गाडी में बजते गाने और फटी हुई आवाज में पीछे पीछे गाते हम, ढलता सूरज, ख़ाली सड़के और हवा में उठती मिट्टी की भीनीं भीनी खुशबु सब कुछ तो था इस सफ़र में यादगार बनाने लायक.

एकाएक हमारी गाडी एक पेड़ के पास रूकती है और अगले ही क्षण हम लोग हाथ में पत्थर लिए पेड़ पर लगे आम को निशाना लगा रहे थे. अपने निशानों में असफल हम लोग कोशिश कर ही रहे थे की दूर से रजिस्थानी पगड़ी पहने हाथ में लट्ठ लिए आता बड़ी बड़ी मूछो वाला ताऊ गाली उच्चारण करता हुआ आ रहा था...ताऊ की स्पीड तकरीबन तकरीबन उसेन बोल्ट जितनी थी. तुम्हारी माँ की....तुम्हारी बहन की .....ये देख हम लोग तुरंत सेकंड के हिसाब से गाडी में पैक होकर स्टीयरिंग घुमा दिए और निकल लिए.

खाटू श्याम पहुँचते पहुँचते अब रात हो गयी और हमारा सफ़र भी धर्मशाला पहुँच कर आ थमा था. धर्मशाला में होते भगवान् के मधुर भजन सुनकर आनंद आ रहे थे और भजन पूर्ण होने के बाद हम लोग अपने कमरे में गए आधे घंटे हद मजाक किया और थक हार कर सो गए.

भोर के चार हो चुके थे और कोई भी उठ कर राजी नहीं और आज तो वैसे भी पूजा का विशेष दिन होने के कारण भीड़ भी हद से ज्यादा होने की सम्भावना. इसलिए मौके की नजाकत को समझते हुए हम लोगो ने उठ कर नहाना धोना ख़तम किया और 5 बजे तक मंदिर की लाइन में जा पहुंचे. जल्दी चलने के कारण हम लोग लाइन में काफी आगे थे और पीछे हर सेकंड लाइन में सेकड़ो लोग जुड़ते चले गए. और भक्तों की लाइन किलोमीटर की होती जा रही थी. अब वो क्षण आ चुका था जिसके लिए हम घर से इतना दूर आये. अब हम लोग भगवान् जी के समक्ष खड़े थे और पीछे से धक्के मरते लोग और आगे से पकड़ कर खीचते पंडित जी के बीच का जो समय था उसमे भगवान् से क्षमा याचना की और बेहतर भविष्य की दुआएं की गयी. और कुछ ही सेकंड में हम लोग समंदर में बहते तिनके की तरह भीड़ मे बह कर बहार आ पहुंचे.

दर्शन के बाद अब राजस्थान की मशहूर कढ़ी कचोरी चल रही थी और अपने दर्शन के बारे में बतला रहे थे कोई कह रहा “बहुत बढ़िया दर्शन हुए” तो कोई कह रहा “जल्दी जल्दी में दर्शन हुए” और सब लोग कढ़ी कचोरी में मस्त थे. की अचानक आवाज आई “और गोलू तेरे कैसे दर्शन हुए...?” गोलू कुछ क्षण ठहरा और मुंह में फसी कचोरी ख़तम करते हुए बोला “ भाई मेरा चश्मा कार में ही रह गया था मुझे तो भगवान् ही ना दिखा”

ये सुनते ही हम सब लोगो में हंसी फट पड़ी और कालू के तो बिचारे के कढ़ी भी नाक से निकल आई हंसी के मारे.

आज भी जब ये वाक्यात याद करता हूँ तो मुस्कान अपने आप होठो पर छा जाती है. और एक बात ये भी कहना चाहता हूँ की इंसान के जीवन की असली कमाई बेहतरीन यादे ही होती है. जिसे याद करके इंसान हंस लेता है चाहे वो जीवन का कोई भी दौर हो. इसीलिए दोस्तों किसी को कुछ देना हो तो अपना वक़्त दीजिये और यादे दीजिये ताकि आप रहे ना रहे मगर आपकी याद उस आदमी के साथ अमर रहे.

इमिहान

शाम का वक्त हो चला था और सूरज अपनी बची कुची गर्मी निचोड़ कर जाने के इंतज़ार में था. बाज़ार में खड़े समोसा खाते हुए एक दम से ध्यान फ़ोटोस्टेट की दूकान पर लगी भीड़ पर गया.

और मेरे दिमाग ने ना जाने क्या सिग्नल दिए की मैंने तुरंत प्रभाव से फ़ोन निकाला और नंबर मिलाते हुए कहा “सर मैं आ रहा हूँ” और में वायु वेग से अपने फ्लैट की तरफ भागा जंहा से एक जोड़ी कपड़ो के साथ अपना झोला कंधे पर टांगा और निकल लिया.

हम सब जिन्दगी में ऐसे दौर से रूबरू जरुर होते है जब कुछ नहीं से बहुत कुछ के कठिन सफ़र पर चलना पड़ता है कभी कभी हाथो की लकीर साथ दे देती है तो कभी किस्मत की फकीरी तोड़ते तोड़ते हौंसले टूट जाते है मगर हम सब को ये सफ़र तय करना ही पड़ता है.

मेट्रो स्टेशन से बहार निकलकर जैसे ही मैंने फ़ोन मिलाया तब वहा दूर से हाथ उठा कर इशारा किया “ यंहा हूँ भाई इधर आ जा ”

फिर रास्ते में पड़ने वाले आंध्र स्टाइल होटल पर मोटरसाइकिल लगा कर हम अपने पसंदीदा विषय राजनीती पर चर्चा करने लगे. दरअसल सर जी भाजपा सपोर्टर है और मैं कांग्रेस विरोधी इस कारण जब भी हमारी चर्चा चलती तो निशाना अखिल भारतीय स्तर की पार्टिया हुआ करती. राम मंदिर, जातिवादी राजनीती, भ्रष्ट राजनेता सब पर हमारे वाद विवाद काफ़ी उच्च स्तर के थे बस कसर इतनी थी की हम टीवी पर नहीं आते थे या किसी न्यूज़ चैनल की हम पर नज़र नहीं पड़ी थी.

खाना निपटा कर हम सर जी के फ्लैट की तरफ़ अग्रसर हुए. शहर से दूर बसे होने के कारण इस इलाक़े ठंड का प्रभाव थोडा ज्यादा ही रहता है. 2 बी. अच. के. का ये सरकारी फ्लैट अकेले इंसान के लिए किसी विला से कम नहीं. किताबो से भरी उनकी अलमारी घर को लाइब्रेरी सिरे सा रोशन किये हुए है. मोसाद, शिवाय, भागवत गीता और अंग्रेजी के भिन्न भिन्न लेखकों की भाति भाति के नाम वाली किताब अपने सर से वायु सेना के किसी लड़ाकू विमान की तरह गुजरती. मगर आदत से मजबूर मैं भी सभी किताबो के फ्रंट पेज पर छपे चित्रों को भली भाति देखता.

रात तक़रीबन सर पर बैठ चुकी थी और हम किसी फेसबुक पेज के एडमिन के बारे में चर्चा कर रहे थे. दरअसल हम दोनों उस पेज के फैन है और अक्सर दफ्तर में भी उसकी पोस्टो की बात करते रहते है. और इस तरह ही चर्चा में आधी रात गुजर गयी और मैं सर जी को गुड नाईट बोल सोने ख़िसक लिए.

सुबह नहा धो कर मैं बैग में वो कागज़ कुछ ढूंढ रहा था मगर वो कमबख्त दिख ही नहीं रहा.तभी दुसरे कमरे से सर जी निकले और बोले “उठ गया भाई ... चले ??”
मैं: मारे गए सर जी
सर: क्या हुआ ??
मैं: एडमिट कार्ड नहीं मिल रहा..!!
सर: तो फिर अब .... ??
मैं: प्रिंटर चाहिए !!
सर: प्रिंटर तो नहीं है !!
मैं: फिर बाजार से कराना पड़ेगा !!
सर: सुबह 6 बजे कौन सा बाजार खुलता है बे !!
बस यंहा से शुरू हुआ लफड़े ने बीसों फ़ोन और जगह जगह के चक्कर कटवा दिए
उस दिन बाइक की पिछली सीट पर बैठते हुए मुझे सर जी विक्रम और मैं बेताल लग रहे थे.

नुक्कड़ की दुकान पर
मैं: भैया यंहा फ़ोटो स्टेट की दुकान है ??
कपडे वाले की दुकान पर
मैं: भैया यंहा फ़ोटो स्टेट की दुकान है??
टायर पेंचेर की दुकान पर
मैं: भैया यंहा फ़ोटो स्टेट की दुकान है ??
दूध वाले की दुकान पर
मैं: भैया यंहा फ़ोटो स्टेट की दुकान है

लेकिन सब का जवाब तकरीबन एक ही था
“भाईसाहब मार्किट 9 बजे खुलेगी”

जब मैं मोबाइल दुकान से हतास परेशान लौट रहा था और जैसे ही बाइक पर बैठा तो ऊपर से. ऊपर आसमान से बारिश की बूँद आकर सिर पर गिरी और में आसमान की तरफ देख कर बोला
“आजा मामा तेरी ही कमी थी”

और फिर हम टाट पर प्लास्टिक की पॉलिथीन फ़साये
“भैया यंहा फ़ोटो स्टेट की दूकान है.. ??” करते घूम रहे थे.

तभी सर जी ने फ़ोन निकाला और मिलाया
“हेल्लो यार मैं तुम्हारे ऑफिस के बहार खड़ा हूँ एक प्रिंट आउट चाहिए अर्जेंट है कोई दोस्त है तो प्लीज माँगा दो”
अगले दस मिनट में एक भाई एडमिट कार्ड की 2 कॉपी दे गया.
और सुबह से मेरी लापरवाही से पीड़ित सर जी ने मुझे एयरफोर्स स्टेशन पर छोड़ चैन की साँस ली.

आज भी जब उस दिन को याद करता हूँ तो कमबख्त हंसी और गुस्सा दोनों आते है. मगर अच्छा लगता है जब आपके सर जी जैसे दोस्त हो जो आपकी लापरवाही और आपकी जरुरत में आपका साथ ना छोड़े.

इस वाक्य से मैंने जीवन में तीन चीज़े सीखी एक तो अपना एडमिट कार्ड पेपर से एक दिन पहले ही प्रिंट आउट निकलवा कर रखो दूसरा जीवन में अच्छे दोस्त होना वरदान है और तीसरा बाजार 9 बजे खुलता है.

धर्मशाला का आखरी मैच

ये कथा स्कूल काल की है सन रहा होगा तकरीबन 2005 -2006 का दौर. संयुक्त परिवार होने के कारण हम चाचा ताऊ के बच्चों की जनसंख्या 11-12 हुआ करती जो आज भी है और सभी की उम्र में भी तक़रीबन 1 - 2 साल का ही फर्क था कुल मिला कर सभी घोर घातक लौंडो की श्रेणी में आते.

हमारे घर के बगल में एक धर्मशाला होती थी जो आज भी है. आकार में अच्छी खासी बड़ी जिसके एक साइड में सरकारी पुस्तकालय दूसरी तरफ सड़क और तीसरी तरफ तालाब है. और तालाब में जंगली घांस फूस. इस धर्मशाला से लगाव का एक कारण ये भी है की हमारे मोहोल्ले और आस पड़ोस के मोहोल्ले के शादी, ब्याह, बारात अक्सर ही इस धर्मशाला में होते थे. हजारीलाल ताऊ धर्मशाला के रक्षक और हमारे लिए राक्षस थे. ताऊ बड़े ही आक्रामक स्वाभाव के धनी थे और एक पव्वा मारने के बाद घनघोर आक्रामक स्वभावी थे मजाल धर्मशाला के आस पास कोई परिंदा भी पर मार जाये

दोपहर के 3 बज चुके है और हम लोगो का 6 – 6 ओवर का वन-डे इंटरनेशनल मैच शुरू हो गया. खेल के रूल बड़े साफ़ और स्पष्ट है दिवार के लगना चौका, अगर बॉल अधर दिवार पर लगी तो छक्का, बगल वाली दिवार का एक रन. इसके साथ ही बाल अगर सीधी बहार गयी तो आउट, बाल अगर छत पर गयी तो आउट और साथ में उठा कर भी लानी पड़ेगी और सबसे बड़ा रूल अगर कोई गेट खटखटाए तो लाइब्रेरी की दिवार कूद कर धर्मशाला से बहार. इसी के साथ बड़े गेट की कुण्डी अंदर से बंद होते ही मैच शुरू हो गया. समय की तंगी और ताऊ के आने के डर के कारण एक दिन में केवल 4 से 5 वन-डे मैच ही हो पाते थे.

अब ये तो अपनी बड़ाई खुद ही करने वाली बात हो जायगी मगर माहौला क्रिकेट में मैं था और इंटरनेशनल क्रिकेट में विराट कोहली है. खेल बड़ा ही रोमांचक चल रहा था 11 रन पर हमारी टीम आल आउट हो गयी और अपोजिट टीम को 3 ओवर में 2 विकेट रहते 7 रन बनाने थे टक्कर काटे की थी. अगली बॉल पर कचोरी ने तुक्के में चौका मार दिया और अब मैच हमारे हाथ से निकलते हुए दिखने लगा. अगली बॉल एक दम सीढ़ी पड़ गयी और दिवार पर लगी किल्लिया उड़ गयी अब मैच और भी रोमांचक हो चूका था. तभी एक दम से दरवाजे बजे “धप्प धाप धप्प"

लौंडो जंहा थे जैसे थे अपने सामन उठा कर डोली से कूद कर धर्मशाला से बहार और ताऊ शुद्ध सांस्कृतिक वाचन बोल कर हमे कोस रहा था "तुम्हारी माँ की ..... बहन की ....."

हमने अपने प्लायेरो के नाम उस दौर के बेहतरीन खिलाडियों के नाम पर रखे हुए थे जैसे जो भाई तेज बोल फेकता उसका नाम अख्तर, स्पिनर का मुरलीधरन और मेरा जैसे युवराज था. अगले दिन भी दरवाजे को कुण्डी मार के मैच का आरम्भ हो चूका था. ये सिलसिला तकरीबन रोज का रहता और हम भी नकटे रोज पहुँच लिया करते धर्मशाला के ग्राउंड में शायद ही कोई ऐसा दिन होता था जब बिना दिवार कूदे हम घर गए हो और और कभी कभी तो पहले मैच में ही भागना पड़ जाता है.

इतवार का दिन था और हम लोग चिंता में थे की आज क्या करे पूरा दिन काटना भारी हो जायगा पार्क में जाओ तो वहा ना खेलने दे धर्मशाला में ताऊ ना खेलने दे करे तो करे क्या. इतने में भागा भागा छोटा गोलू आया और हाफ्ते हाफ्ते बोला. “हज़ारी ताऊ नहीं है बहार गया है” और अगले दो मिनट में लोंडे धर्मशाला के दरवाजे पे.

अब हम लोग बड़े खुश थे की पूरा दिन खेलेंगे और बैट बॉल लिए ग्राउंड में जा रहे थे. तभी कालू बोला देख शोएब अख्तर की बॉल दिखाऊ शोएब अख्तर की और वो रन अप लेते हुए दिवार की तरफ बॉल कराने भागा. बाल वाकिये में थोड़ी तेज थी लेकिन बाल आगे बढ़ रही थी किसी और पथ पर, पथ जंहा बाल को नहीं जाना चाहिए था और बाल जा टकराई जंहा उसे नहीं टकराना चाहिए था. धर्मशाला के संस्थापक के उस फोटो पर बाल सीधी जा बजी और तस्वीर निचे गिर कर जय बोल गयी. अगले ही पल जिस स्पीड से हम अन्दर जा रहे थे उसी स्पीड से वापिस घर निकल लिए और पूरे दिन धर्मशाला के आस पास भी नहीं घुमे.

अगले दिन स्कूल से हम धीरे धीरे घर पहुंचे तो हमारे घर में काफी शोर शराबा था जी हां ताऊ हमारे घर वालो को हमारे कर्मो के बारे ढपली पीट पीट कर बता रहा था और कह रहा था अगली बार इनमे से कोई भी धर्मशाला में दिख गया तो अच्छी बात नहीं होगी देख लेना फिर.और इस तरह वो शोएब अख्तर की बाल हमारे धर्मशाला ग्राउंड की आखरी बाल रही.

अब जब कभी धर्मशाला में शादी ब्याह के प्रोगराम में जाते तो हजारी ताऊ को राम राम करके संस्थापक ताऊ की फोटो तरफ स्माइल कर देते है.

घर जाकर क्या करूँगा

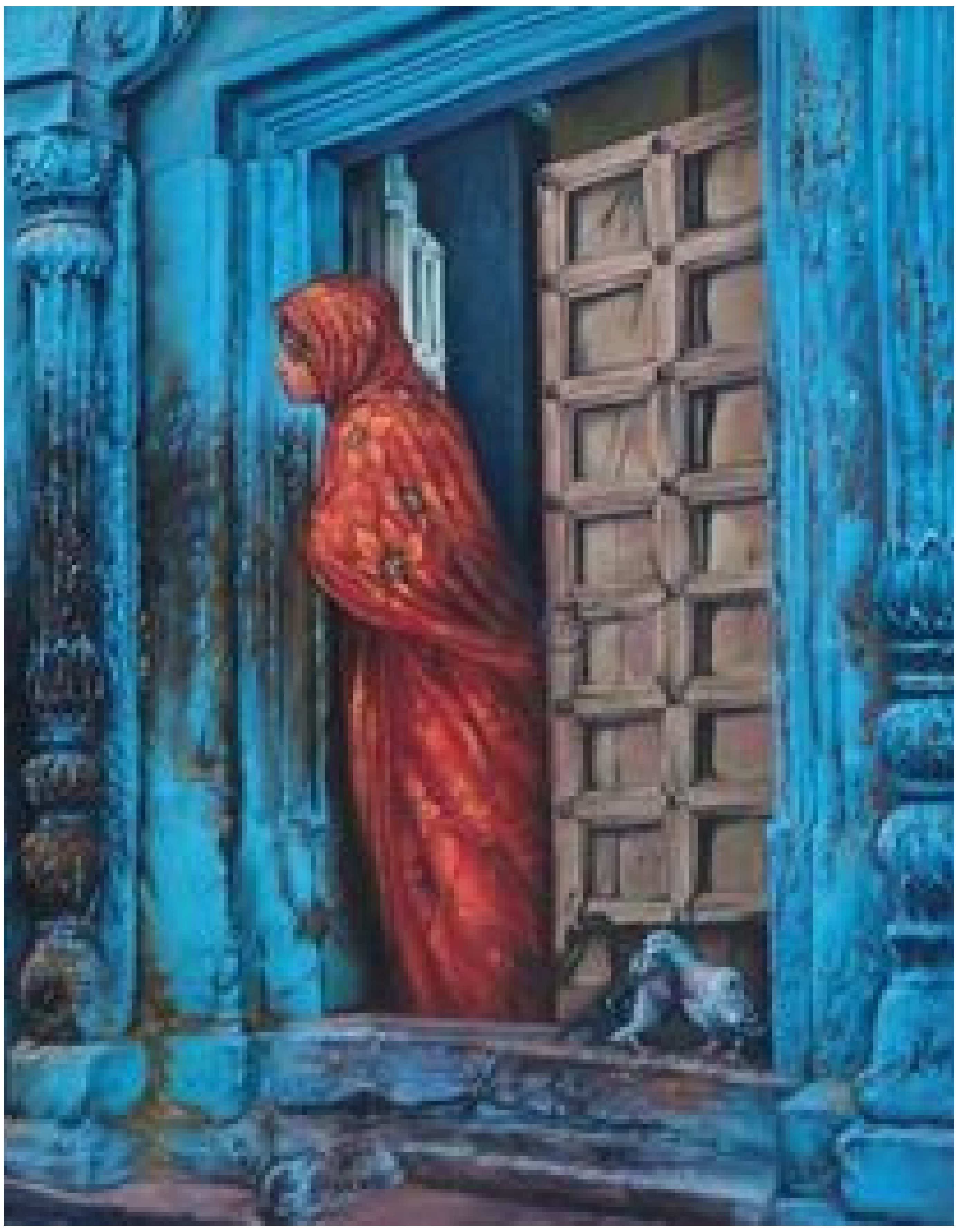

दफ्तर में ये एक आम दिन था और सुबह की चाय का कप हाथ में लिए मैं लोगो के हाल पूछ रहा था. रोज के मुकाबले उस दिन सर्दी ज्यादा थी और कमबख्त चाय में अदरक ने भी स्वाद को दो गुना कर दिया. काश गरम गरम पकौड़े और हो जाते तो दुनिया में आने का मजा आ जाता मैं मन ही मन सोच रहा था.

अचानक से दरवाज़ा खुलने के आवाज़ कानो में पड़ी और हेड मैडम अंदर आई और कहने लगी

मैडम: “प्रदीप ये वो ये वो ये वो और ये वो काम भी कर देना थोडा अर्जेंट है
मैं: ठीक है मैडम शाम तक हो जायगा. (मौसी 6 महीने में भी ना हो ये तो मैं मन ही मन कहा)

और ये कहकर मैडम निकल ली तब तस्सली से चाय की घुट ली.

हमारे चाय पर होते भारी भरकम डीस्कशन से ऑफिस के लोग सहमे सहमे से रहते थे. आज मुद्दा था की ट्रिपल तलाक़ पर क्या सुप्रीम कोर्ट को जजमेंट देने का अधिकार है क्युकी ये “धर्म के पालन के कानून” के खिलाफ है. किसी भी समुदाय को अपना धर्म अपने हिसाब से पालन करने का अधिकार सविधान देता है.

इतनी देर में दीपक आ गया और हाल पूछने लगा. मैंने भी हाथ में पकड़े कप को ऊपर उठाते हुए बिंदास होने का इशारा किया. और वो इक उलझी सी स्माइल के साथ जाने लगा.

मैं: अरे दीपक जी वो मैडम सुबहे सुबहे काम की लिस्ट पकड़ा गयी जिसमे ये ये ये काम में आपको बोला है और वो वो वो काम में मुझे बोला है
दीपक: यार भाई अभी में कुछ नहीं कर पाऊंगा तुम ही देख लेना.
और ये कहते हुए वो निकल लिया

मैं ये सोचने लगा की "यार ये ऐसे कैसे बोल सकता है"
फिर मुझे लगा हो सकता है भाई को रात को नींद ना आई हो या शायद अभी मूड ख़राब हो इससे बाद में बात करता हूँ और मैंने मेल बॉक्स खोल लिया.

दफ्तर में अक्सर देश दुनिया के गरमा गर्म मुद्दों पर चर्चा होती है और उसके तकनिकी और निजी मुद्दों पर हम लोगो में विचारों का आदान प्रदान करते रहते.

मैं लैपटॉप स्क्रीन में आँखे गाड़े कुछ देख रहा था की एकाएक मनीष नजदीक आया और बोला
मनीष: अरे सर जी इतना काम कर के कहा जाओगे..??? बस करो !!
मैं: अरे काम ना यार में तो बस यू ही देख रहा था स्पेसिफिकेशन.
और बात बदलते हुए मैंने बोला
मैं: और बताओ सर जी दिवाली का क्या प्रोगराम है ...???
मनीष: कुछ नहीं दिन में यारो दोस्तों के साथ घुमुंगा और शाम को घर !!
मैं: और दीपक का ...??

मनीष ने ऊपर की तरफ देखा और अपना चश्मा निकल कर आँखों में उंगलिया घुसाते हुए हुए कहना लगा.

मनीष: उसकी बड़ी दु:ख भरी स्टोरी है यार
मैं : क्या हो गया ....??

मनीष:
उसकी मम्मी-पापा अलग अलग जिले में नौकरी करते थे. तो पापा की तबियत अक्सर डाउन ही रहती. एक दिन मम्मी, पापा से मिल कर घर वापिस जा रही थी की एकदम रेलवे स्टेशन पर उनका पैर फिसल गया और उन्हें मैक्स हॉस्पिटल में एडमिट कराया था. उधर डॉक्टरो ने पैर का ऑपरेशन ही गलत कर दिया और मम्मी की तबियत दिन पे दिन ख़राब होती गयी और आंटी चल बसी. थोड़े ही दिन में इस दु:ख में उसके पापा भी गुजर गए. फिर बता रहा था की कॉलेज टाइम में एक लड़की पसंद थी और लग रहा था बात शादी तक बात पहुँच जायगी. की एक दिन उसे खून की उलटी हुई और अगले दिन वो भी चल बसी. एक छोटी बहन है अभी दिल्ली यूनिवर्सिटी में पढ़ रही है. बाकि ना कोई आगे ना पीछे.

ये सब सुनते हुए मेरा गला सूखा हुआ और दिमाग एकदम सुन्न महसूस हो रहा था.

मैं: फिर हॉस्पिटल वालो की शिकायत नहीं की ??

मनीष:
हॉस्पिटल पर केस किया हुआ है और वो लोग गलती मान रहे है और पैसे लेकर मामला रफा दफा करने का दबाव बना रहे है दीपक पर.

मैं: अच्छा फिर...??

मनीष: वो कह रहा है मैं पैसे का क्या करूँगा

मैं: यार वो वैसे काम में भी इंटरेस्ट नहीं दिखता शायद ज्यादा परेशांन है?

मनीष: यार वो UPSC की तैयारी कर रहा है और कहता है बस जिन्दगी का अब ये ही मकसद रह गया.

और मनीष के बोला एक एक शब्द मेरे कानो में छपता जा रहा था.

मैं: फिर तूने बोला नहीं की यार दिवाली पर तो घर चला जा ?
मनीष: पूछा था कह रहा था..
“घर जाकर क्या करूँगा”

मैंने आखे बंद की और गहरी सास लेते हुए आँखे खोली फिर विंडोज + L बटन दबा कर बोला
“चल आ चाय पी कर आते है”

सबको सब नहीं मिलता मेरे भाई.... सब नहीं मिलता.

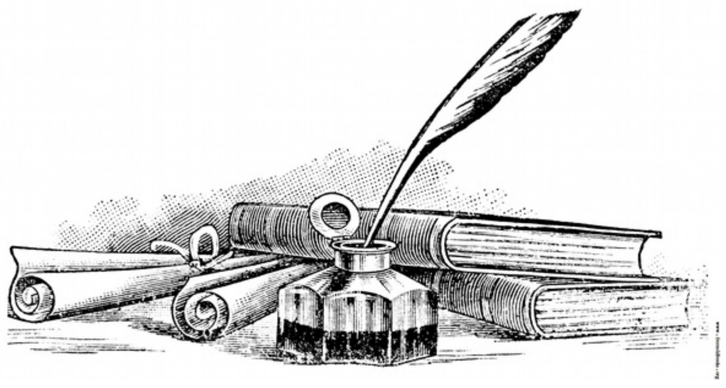

लेखshala

Expressing the Inexpressible

www.Lekhshala.com